ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

Volume 11, Issue 3, May-June 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

IMPACT FACTOR: 7.583

| www.ijarasem.com | ijarasem@gmail.com | +91-9940572462 |

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 3, May-June 2024 |

गोडवाड़ क्षत्र में स्थापत्य का विकास (1300-1700 ई.) मंदिर निर्माण के विशेष सन्दर्भ में

Praveen

B.Sc., M.A., Department of History, B.Ed., NET, Pali, Rajasthan, India

सार: गोड़वाड़ भारत के राजस्थान राज्य पाली जिले का मेवाड का सीमावर्ती एक क्षेत्रीय इलाका है। हर साल यहाँ गोडवाड़ महोत्सव मनाया जाता है। यह क्षेत्र अरावली और मेवाड़ की तराई में है।[1][2][3]

इसका विस्तार अरावली पर्वत से दक्षिण पूर्व में मेवाड़ तथा दक्षिण पश्चिम में जालौर और सिरोही तक है। सांडेराव को गोडवाड़ का द्वार भी कहा जाता है। इसमें सम्मिलित स्थान हैं:

- पाली जिला, प्रतापगढ़, सादड़ी ,बाली, राजस्थान, रानी, राजस्थान, देसूरी और सुमेरपुर तहसील का कुछ क्षेत्र।
- देसूरी, फालना, रानी, सुमेरपुर, खिंवाड़ा, घाणेराव आदि शहर/कस्बे है।

पर्यटन

गोडवाड़ का क्षेत्र अपने कला ,परम्परिक जीवन शैली और संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है।

यहाँ के हर छोटे बड़े गावो में हवेली गढ़ मौजूद है जिनमे मुख्य है घाणेराव,बेडा,वरकाणा,फालना,चाणौद,आउवा,नारलाई आदि के रावले गढ़ व् देसूरी किला अन्य में नाडोल,बोया,सिन्दरली,कोटड़ी,बीजापुर,आदि के गढ़ और पुरानी हवेलिया। भाटुन्द गाँव ब्राहमणो की सदियों पुरानी नगरी है। भाटुन्द गांव के संथापक श्री आदोरजी महाराज ने अपने 18 परिवार वालों सहित 13 शताब्दी में जौहर किया था। यहाँ पर हर साल माँ शीतला माता का विशाल मेला लगता है। यहाँ पर देव मन्दिर अधिक होने के कारण इसे देव नगरी भी कहते हैं। ब्राहमणो की नगरी होने के कारण इसे ब्रह्म नगरी भी कहते हैं। १०वी व ११ वी सदी का सूर्य मन्दिर है। यह महाराजा भोज ने बनाया था। यहाँ का तालाब बाली तहसील में सबसे बड़ा है, यह भी महाराजा भोज ने खुदवाया था।

पर्यटको को आकर्षित करते आशापुरा जी नाडोल,रणकपुर मंदिर,जवाई बांध,कुम्भलगढ़ राष्ट्रीय अभयारण्य,मुछाला महावीर,ठंडी बेरी,परशुराम जी गुफा मंदिर,पैंथर साइट आदि।

इतिहास

गौड़वार प्राचीन समय से ही इतिहास में अपनी उपस्थिति दर्ज करता रहा है मेवाड़ आने का एक मार्ग देसूरी दर्रा भी था मेवाड़ के महाराणा ने इस क्षेत्र की और मार्ग की रक्षा का भार सोलंकी और मेड़तिया राजपूतो में दे रखा यहाँ था।

राजपूतों के आगमन से पहले यह क्षेत्र गोंड गोत्रिय मीणाओं के अधीन था। इसी कारण यह क्षेत्र गोडवाड कहलाता है। कालांतर में मीणाओ को हटाने के बाद राजपूतों ने अपना आधिपत्य स्थापित किया और मूलनिवासी मीणाओ को हांसिए पर धकेल दिया गया। यहां निवास करने वाले मीणा जाति के सरदार हमेशा मेवाड़ को आतंकित किया करते थे।

दिल्ली के बादशाह औरंगज़ेब ने जब इस दर्रे से मेवाड़ पड़ आक्रमण किया तब देसूरी के बिक्रम सोलंकी और घाणेराव के हिम्मत मेड़तिया ने मुगलो को हराया इस सन्दर्भ में एक कहावत प्रसिद्ध है। बादशाह री पाग हिम्मत बिके उतारी

यह क्षेत्र पहले मेवाड़ के आदिपत्य में था बाद में मारवाड़ के राजा विजय सिंह ने मेवाड़ के गृह युद्ध के समय इस क्षेत्र पर अधिकार कर लिया ; यहाँ के अधिकतर ठिकाने जोधपुर मारवाड़ के प्रति उदासीन रहे, देसूरी के खालसा हो जाने के बाद घाणेराव ठिकाने के ठाकुर को गोडवाड़ का राजा कहा जाता था और सरकार कह कर संबोदित किया जाता था। यहाँ मुख्य ठिकानो में घाणेराव, बेडा,नाणा,वरकाणा, फालना, चाणोद,नारलाई, बोया, देवली पाबूजी,बीजापुर, साण्डेराव,मालारी,बीसलपुर, गलथनी,कोलीवाड़ा,पावा,कंवला आदि हैं।

राजस्थान में शायद यही एक ऐसा क्षेत्र है राजपूतो की ज्यादातर छाप एक ही क्षेत्र में उपस्थित है:

राठौड़ (मेड़तिया,जैतमालोत,चांपावत,जोधा, कूंपावत,सिंधल,बाला,रुपावत,रिड़मलोत,वैरावत उदावत)

चौहान - (सांचौरा,सोनीगरा,खींची,बालेचा, माद्रेचा)

कछवाहा - (राजावत ,शेखावत)

सिसोदिया - (राणावत,शक्तावत,कीतावत, मांगलिया,भाखरोत,)

सोलंकी - (राणकरा) आदि।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 3, May-June 2024 |

I. परिचय

राजस्थान प्रांत के पाली जिले का गोडवाड़ क्षेत्र पूर्व में परशुराम महादेव से पश्चिम में दुजाणा तथा उत्तर में जवाली से लेकर दक्षिण में नाना स्टेशन तक फैला हुआ है। गोडवाड़ पाली जिले का समृद्ध इलाका है एवं व्यापार कृषि-खनिज सम्पदा त था संस्कृति का सलोना संगम है।

गोडवाड़ के नामकरण के सम्बन्ध में अपने अपने मत व कई किंवदन्तियाँ है परन्तु जनश्रुतियाँ भी इतिहास के निर्माण में अपनी अहम् भूमिका रखती है जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।[1,2,3]

इतिहासकारों अनुसार यह क्षेत्र धुर पौराणिक काल में भी विशिष्ठ रहा है। इस समय यह इलाका अर्बुदाचल क्षेत्र में आता था। इस क्षेत्र में भगवान महावीर ने भी विचरण किया है क्योंकि जैन तीर्थ माला अनुसार नाणाग्राम में भगवान महावीर के जीवन काल में स्थापित मंदिर है। जिसकी पुष्टि १३वीं व १४ वीं शताब्दी के शिलालेख करते है। जैन साहित्य में यह उक्ति प्रसिद्ध है।

नाणा दीयाणा नांदिया, जीवतं स्वामी वांदिया ॥
अरावली की तलहटी में इतिहास की स्वर्णिम इबारत लिखी हुई है गोडवाड़ में। तपस्वी, मनीषी से लेकर दानदाताओं और आजादी के स्वतंत्रता वीरों के विराट व्यक्तित्व को संकेत-प्रतीक में दर्शाते गोडवाड़ के कई स्थल अपनी बात सुनाते हुए लगते है। गोडवाड़ क्षेत्र के धार्मिक, पौराणिक व ऐतिहासिक महत्व को जानने की लालसा में प्रसिद्ध यात्राी हवेन सांग ने सातवीं शताब्दी में कई स्थानों का भ्रमण किया था।
परशुराम गुफा-समुद5 तल से 3995 फुट की टंचाई पर अरावली की वादियों के बीच स्थित यह गुफा सादडी से 14 किलोमीटर पूर्व में स्थित है। हैदयवंÓाीयों के संहार के पश्चातप परशुराम ने यहीं बैठकर तपस्या की थी।
जूना खेड़ा-चौहानों की राजधानी रहे नाडोल के इस क्षैत्र में पुरातात्विक उत्खनन से पूरी एक सभ्यता के अवशेषा प्राप्त हुए है। देसूरी तहसील स्थित इस कस्बे के भव्य शिल्प सजे देवालय तथा आशापुरा माता का मंदिर कला और श्रद्वा के केन्द्र है। बताते है कि अतीत में अतिसंवेदना रहे इस क्षैत्र को गजनी व ऐबक ने रौंदने की कोशिश की थी। इतिहासकार इस स्थल गुरू गोरखनाथ, नारद व राजा भोज से भी जोड़ते है।
हिंगलाज माता, गुडालास लार्ड विलियम वैंंिटक के समय में घणी ग्राम में हिंगलाज माता की गुफा मंदिर के आसपास पिंडारियों ने मुंह छुपाया था। जिन्हें कर्नल स्लीमैन ने पराजित किया था। शिव पूराण में वर्णित 52 शक्ति पीठों में सर्व प्रथम स्थान हिंगलाज माता का हैं। मूल स्थान पाकिस्तान में है।
जवालेश्वर महादेव जवाली स्थित इस मंदिर में साधाना रत महर्षि जाबाली ने वेदों की रचनाएं रची थी।सूर्य मंदिर भाटून्द तालाब के मुहाने पर स्थित पाण्डव कालीन सूर्य मंदिर, यहां की कलात्मक धरोहर है। बाली तहसील के इस क्षैत्र में गंधर्व सेन ने तपस्या की थी।
ढालोप-बाबा रघुनाथ पीर की धूणी के लिये सुप्रसिद्व इस स्थल पर राजस्थान, गुजरात व मालवा से तीर्थ यात्रियों का आना जाना लगा रहता है। यहां ब्रहा ाजी का प्राचीन मंदिर भी है।
रणकपुर-48 हजार वर्ग फीट में फैले, 2 मंजिले इस प्रस्तर नक्काशी सजे मंदिर की शिल्पकला[4,5,6] दर्शनीय है। मघई नदी के मुहाने, मादरी पहाडी की तलहटी में 84 देव प्रतिमाओं विराजित इस मेघ मंडप अलंकृत मंदिर में 1444 खंभे पर उत्कीर्ण नक्काशी, बरबस मनमोह लेती है।
पंचतीर्थ-जैन पंचतीर्थ घाणेराव, वरकाणा, सादडी, नाडोल व नारलाई इस क्षैत्र को अद्भूत गरिमा प्रदान करते हैं । कुभा के शासनकाल में धरणीशाह द्वारा बनवाया रणकपुर मंदिर , मूंछों के चमत्कार के लिये प्रसिद्ध मुछाला महावीर घाणेराव, 11 जैन मंदिर सहित नारलाई,पदमप्रभु, नेमीनाथ, भगवान ऋ ऋषभदेव, जीरावला पाश्वनाथ के मंदिरों की नगरी नारलाई, पाश्वनाथ मंदिर व गोडवाड जैन महासभा मुख्यालय की नगरी वरकाणा इस तपोभूमि की श्रद्वा में ही वृद्वि करते है। सेवाड़ी, राता महावीर जी-बीजापुर बेडा नाणा, खुडाला, खीमेल, सांडेराव, जाखोड़ा आदि के मदिरों का शिल्प भी खासा मोहक है।
बाली दुर्ग-राजपुताने के इतिहास की धरोहर ने स्वतंत्रता संग्राम के कई नायकों को शरण दी है। आर.डी.गट्टानी को यहां काफी समय के लिये रखा गया था।
मुछाला महावीर-घाणेराव के निकट स्थित मुछाला महावीर जैन तीर्थ प्राकृतिक सौन्दर्य के मध्य आया हुआ हैं। इस चमत्कारिक मन्दिर के बारे में किवंदन्ती है कि भक्त की लाज रखने के लिये भगवान महावीर की मूर्ति पर मूछें निकल आई थी तभी से इस स्थान को मुछाला महावीर के नाम से जाना जाता हैं।
वरकाणा तीर्थ-रानी से 5 किलोमीटर दूर वरकाणा गांव में काफी संख्या में जैन मन्दिर बने हुये हैं यहां वर्ष भर श्रद्वालुओं का आना जाना लगा रहता है मन्दिरों की कारीगरी अत्यन्त मन भावन हैं।
नारलाई तीर्थ-जैन तीर्थ नारलाई, रानी-देसूरी मार्ग के मध्य वरकाणा से 10 किलोमीटर की दूरी पर पहाडी पर स्थित मन्दिर यहां के सौन्दर्य को दिन दुना रात चौगुना कर देता है। गुप्त िशलाऐं व मूर्तियां यहां के मुख्य आकर्षण का केन्द्र हैं। इसके अतिरिक्त गोडवाड में फालना का स्वर्ण मन्दिर, घाणेराव कीर्तिस्तंभ, रानी का सांई धाम मन्दिर, सादडी का मुक्ति धाम, नाडोल आशापुरा माता मन्दिर तथा मुण्डारा चामुण्डा माता मन्दिर भी देशी एवं विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बन रहे हैं।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 3, May-June 2024 |

II. विचार-विमर्श

प्रसिद्ध जैन मंदिर राता महावीरजी के नाम से विख्यात प्राचीन मंदिर जवाई बान्ध रेल्वे स्टेशन से २० किलोमीटर दूर पूर्व दिशा की ओर बीजापुर गांव के पास ५ किलोमीटर दूर एकांत जंगल में अरावली पर्वत श्रृंखलाओं के बीच स्थित है। स्वयं लेखक एवं प्राचीन पांडुलिपियों-शिलालेखों के आधार पर कभी यहां विशाल नगरी के रूप में थी। इस नगरी को हस्तिकुंडी या हथूण्डी के नाम से पुकारा जाता था और यह राष्टकुटों की राजधानी थी। इस उजड़ी नगरी का वैभव राता महावीर का ही मंदिर रह गया है जो पुरातन इतिहास को संजोये हुए अनेक उतार-चढ़ाव की कहानी दोहरा रहा है। वैसे अनेक मंदिर-खंडहर एवं बिखरे प्राचीन किले के अवशेष इस बात को पुष्ट करते है कि यहां कभी कोई विशाल नगरी अस्तित्व में थी। यहां के शिलालेखों से तो उस काल के राजाओं की व्यवस्था और जैनाचार्यों के प्रति उनकी श्रद्धा [7,8,9]की पूरी जानकारी मिल रही है।
राजस्थान के इतिहासकारों ने इस नगरी को व यहां के निर्माण कार्य को ५वीं शताब्दी से आंका है। इस मंदिर के बारे में इसका निर्माण राजस्थान के ५५६ जैन मंदिरों में भगवान पार्श्वनाथ के तीसरे पट्टधर आचार्य सिद्धीश्वरजी के उपदेश से श्रेष्टी गोत्र के वीरदेव ने बनवा कर आचार्य द्वारा प्रतिष्ठा करवाई थी। ऐसा भी उल्लेख मिलता है कि इस मंदिर की प्रतिष्ठा के पश्चात वि.सं. ६२३ में भीषण अकाल पड़ा था उस समय ३९वें पट्टधर आचार्य देवगुप्त सूरिश्वरजी के उपदेश से हस्तीकुंडी के लोगों ने धन एकत्रित किया और पशुओं के चारा तथा मनुष्यों को अन्न वितरण करके `जीवदया' का महान कार्य किया था। वि.सं. ७७८ में आचार्य कंकू सूरिश्वरजी के उपदेश से हस्तीकुंडी में २६ मंदिरों का निर्माण करवाया गया था।

इतिहासकारों के अनुसार उन दिनों हस्तीकुंडी बड़ी समृद्ध नगरी थी। यहां के राजा के पास असंख्य हाथी थे। इसी हस्ति सेना के बल पर राष्ट्रकूटों ने दूर-दूर तक अपना साम्राज्य का विस्तार किया था। यही कारण है कि राता महावीरजी की प्रतिमा के नीचे जो सिंह का जो लांछन अंकित है उसका मुख हाथी का है। संभवत: हाथियों से इस नगरी की प्रसिद्धि हुई होगी इसलिए इसका नाम हस्तीकुंडी पड़ा हो। हस्तीकुंडी के राठौड़ अत्यन्त कुशल वास्तुविद् थे, उनकी नीति-निपुणता एवं प्रजा परायणता के कारण वह नगरी बहुत सुन्दर भवनों और देवालयों से सुसज्जित थी। मंदिरों के शिखरों पर स्वर्णकलश दूर से चमकते थे। यहां की मधुर घंटियों की आवाज से घाटी गुंजायमान होती रहती थी। यहां नदी के दोनों ओर साठ कुएं और नौ बावड़ियां तथा सोलह सौ पनिहारियों की लौकिक युक्तियां आज भी इस प्रदेश में चरितार्थ होती है।

संवत १०८० में महमूद गजनवी ने सोमनाथ जाते पहले नाडोल के रामपाल चौआण व बाद में हस्तीकुण्डी के दत्तवर्मा राठौड़ से युद्ध किया। इस युद्ध में गजनवी ने हस्तीकुण्डी को बुरी तरह लूटा और उजाड़ दिया। सभी मंदिरों को तोड़ा और देव प्रतिमाओं को भी क्षतिग्रस्त किया। हस्तीकुण्डी नगर के साथ-साथ राता महावीरजी के मंदिर ने भी थपेड़ों को झेला परंतु संतों के उपदेशों से इसका जीर्णोद्धार व पुन: निर्माण होता रहा जिससे मंदिर के मूल स्वरूप में भी बदलाव आ गया, किन्तु यह जैन मंदिर आज भी अतीत का बखान कर रहा है।

इस मंदिर का जीर्णोद्धार कार्य वि.सं. २००१ में बीजापुर रहनवासियों द्वारा आरंभ करवा कर २००६ वि.सं. में मूल मंदिर का कार्य सम्पन्न करवाया। बीजापुर श्रीसंघ की विनती पर आचार्य श्रीमद् विजय वल्लभ सूरीश्वरजी ने यहां आकर के अन्जनशलाका तथा प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न करवाया। तब से लगातार निर्माण कार्य चल रहे है। अभी वि.सं. २०६५ के अन्तर्गत इस लेख को लिखने हेतु जाने पर देखा कि नवनिर्मित-नवशिल्प के आधार पर पुन: निर्माण मंदिर का अभ्युउत्थान कार्य चल रहा है। कायापलट हो रही है। महावीर समोसरण का भी निर्माण कार्य हो रहा है। जो अपने आप में अद्भुत एवं दर्शनीय है।

राता महावीर के मुख्य मंदिर के सामने एक छोटा सा महावीर यक्ष का प्राचीन मंदिर है जिसको भी नया स्वरूप दिया जाना है। राता महावीर में मुख्य मंदिर में कुल २४ देव कुलिकाएं है। द्वार के दोनों ओर दाएं-बांए ६-६ है। अन्दर प्रवेश होने पर रंगमंडप दिखाई पड़ता है जहां दो कलापूर्ण आले है जिनमें एक में मातंग यक्ष दूसरे में सिद्धायिका देवी की प्रतिमाएं है। सामने ही मूलनायक भगवान महावीर की भव्य प्रतिमा है जिस पर लाल विलेप चढ़ा हुआ है। भगवान के प्रभासन पर दोनों ओर सिंह और बीच में हाथी के मुख है, यह प्रभासन भी नया बना हुआ है तथा पुराना प्रभासन जिस पर संव. १०५३ का लेख अंकित है वह मंदिर के एक कमरे में सुरक्षित रखा गया है। रंगमंडप की गुम्बज की स्थापत्यकला दर्शनीय-अवलोकनीय-नयनाभिराम है। मंदिर में एक भूमिगत मंदिर भी है जिसमें उतरते ही सामने लालवर्णी भगवान महावीर की प्रतिमा हैं, बाहर प्रदिक्षणा में यक्षों की प्राचीन प्रतिमाएं है और वहीं एक कमरे में एक पट्ट पर यशोभद्रसूरी, बालभद्राचार्य एवं क्षमा त्र+षि की प्रतिमाएं अकित है।

राता महावीरजी के मंदिर की यह विशेषता रही है कि जब-जब इसका जीर्णोद्धार हुआ तो प्राचीन अवशेषों को भूमि में नहीं दबा कर उन्हें एक कमरे में रख दिया गया या कमरे की दीवारों में जड दिया गया जिससे मंदिर की प्राचीनता का पता लग सके। यह कमरा इस मंदिर के इतिहास का साक्षी बना हुआ है। इस कमरे की चौखट पुराने रंग मंडप की चौखट है। कमरे में अनेक प्राचीन प्रतिमाएं, प्रभासन, शिलालेखों के अतिरिक्त प्राचीन कलाकृतियां जड़ी हुई है जो मंदिर के प्राचीन कला वैभव की अनुभूति दिलाता है।

मुख्य मंदिर के बाहर एक गुरू मंदिर भी बना हुआ है जिसमें श्रीमद् विजय वल्लभ सूरीश्वरजी की प्रतिमा स्थापित है। पास ही एक उपाश्रय है और आगे यात्री भवन बना हुआ है। यहां एक विशाल यात्री भवन और है, जिसे[10,11,12] राता महावीर (राष्ट्रकूट) राता

महावीर जैन यात्री भवन के नाम से पुकारा जाता है। इसी भवन में मंदिर की पेढ़ी, भोजनशाला और आयंबिल खाता भी चल रहा है। यहां प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ला एवं कार्तिक शुक्ला १० को मेला भरता है जिसमें आस-पास के वन प्रान्तर से आदिवासी आकर नृत्य करते हुए भगवान महावीर की आराधना करते है।
राता महावीर तीर्थ पर पहुंचने के लिए जवाई बांध रेल्वे स्टेशन पर बीजापुर के लिये बसें व टेक्सियां उपलब्ध हो जाती है और बीजापुर से भी टेक्सियों की सुविधा प्राप्त है।
बीजापुर-हटुण्डी पर शोधकर्ताओं से निवेदन है कि इस क्षेत्र में अपार संभावनाएं धरोहर संबंधी प्राप्ति हेतु उपलब्ध हो सकती है।

III. परिणाम

भूवैज्ञानिकों और पुरातत्ववेत्ताओं ने पाली और आसपास के क्षेत्र में प्रागैतिहासिक काल में आदिमानव के में बसने का पता लगा लिया है और उनकी यह स्थापना है कि पाली और इसके आसपास का इलाका भी एक समय विशाल पश्चिमी समुद्र से निकला था। प्राचीन 'अर्बुदा' प्रांत के एक भाग के रूप में, इस क्षेत्र को कभी 'बल्ल'-देश के नाम से भी जाना जाता था शायद इसलिए कि वैदिक युग में, महर्षि जाबाली वेदों की व्याख्या और अवगाहन के लिए इसी पाली क्षेत्र में रहे थे । कहते हैं- महाभारत युग में, पांडव भी अज्ञातवास (गोपनीय वनवास) के दौरान कुछ समय यहाँ की एक तहसील बाली के पास छिपे थे ।

लिखा मिलता है सन 120 ईस्वी में, कुषाण युग के दौरान, राजा कनिष्क ने रोहट और जैतारण क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की थी, जो आज पाली के भाग हैं । सातवीं शताब्दी ईस्वी के अंत तक वर्तमान राजस्थान राज्य के अन्य हिस्सों सहित पाली पर भी चालुक्य राजा हर्षवर्धन के साथ का शासन था।10 वीं से 15 वीं शताब्दी की अवधि के दौरान, पाली की सीमाएं मेवाड़, गोडवाड़ और मारवाड़ से मिली हुई थीं। नाडोल क़स्बा चौहान-वंश की राजधानी थी। सभी राजपूत शासकों ने समय समय पर होने वाले विदेशी आक्रमणकारियों का विरोध किया लेकिन व्यक्तिगत रूप से वे एक-दूसरे की भूमि के लिए भी आपस में लड़े। पृथ्वीराज चौहान की हार के बाद, मोहम्मद गौरी के खिलाफ, इस क्षेत्र में राजपूत सत्ता छिन्न-भिन्न हो गई। पाली का गोडवाड़ क्षेत्र, मेवाड़ के तत्कालीन यशस्वी शासक महाराणा कुंभा के अधीन हो गया; हालाँकि पाली शहर- जिस पर पालीवाल ब्राह्मण शासकों का शासन था, अन्य पड़ोसी राजपूत शासकों के संरक्षण के कारण शांतिपूर्ण और प्रगतिशील बना रहा। पालीवाल ब्राह्मणों की आबादी अधिक होने से इसे उनका जातिसूचक नाम –पाली मिला !

16 वीं और 17 वीं शताब्दी में पाली के आसपास के क्षेत्रों में कई युद्ध लड़े गये । अगर शेरशाह सूरी को राजपूत शासकों द्वारा जैतारण के पास गिरि की लड़ाई में हराया गया, तो मुगल सम्राट अकबर की सेना का गोडवाड़ क्षेत्र में महाराणा प्रताप के साथ युद्ध हुआ । मुगलों द्वारा लगभग पूरे राजपूताना पर विजय प्राप्त करने के बाद, मारवाड़ के वीर दुर्गादास राठौड़ ने मुगल सम्राट औरंगजेब से मारवाड़ क्षेत्र को छुड़ाने के लिए संगठित प्रयास किए क्यों कि तब तक पाली मारवाड़ राज्य के राठौड़-वंश के अधीन हो गया था ।

पाली का पुनर्वास महाराजा विजयसिंह द्वारा किया गया और जल्द ही एक बार फिर यह एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक केंद्र बन गया।
पाली. गोडवाड़ क्षेत्र के जैन तीर्थों में नाणा गांव का मंदिर महत्वपूर्ण माना जाता है। मान्यता के अनुसार इस जैन मंदिर में मूलनायक की प्रतिमा की स्थापना भगवान महावीर के जीवनकाल में ही हुई थी। इस कारण यह मंदिर जीवित स्वामी के नाम से ही प्रसिद्ध है। जिसका प्रमाण इस लोकवाणी नाणा, दियाणा, नादिया, जीवित स्वामी वांदिया...में मिलता है। मंदिर में प्राप्त विसं 1017 से संवत 1659 तक के शिलालेखों से यह माना जाता है कि यह मंदिर के जीर्णोद्धार के समय के लेख है। इस मंदिर की प्राचीन शिल्पकला के पत्थर[13,14,15] और प्राचीन लेख मंदिर के भूमिगत कमरे में रख कर उसे बन्द कर दिया गया है। ऐसा एक भूतल गांव की कोट धर्मशाला में होना बताया जाता है। जहां इस मंदिर का प्राचीन इतिहास दबा है।
मंदिर की प्रदिक्षणा में चौमुखी देहरी जीवित स्वामी के नाम से विख्यात नाणा के भगवान महावीर स्वामी मंदिर के गर्भ गृह, गुढ़ मण्डप व रंग मण्डप आदि में प्रतिमाएं स्थापित है। मंदिर की प्रदिक्षणा में चौमुखी प्रतिमा की देहरी है। जिनकी कला अद्भूत है। भगवान महावीर की प्रतिमा का तोरणयुक्त परिकर शिल्पकला का शानदार नमूना है। मंदिर में नन्दीश्वर द्वीपका पाषाण पट्ट में नन्दीश्वर द्विप के शिखरबन्ध आकर्षण का केन्द्र है। बावन जिनालय वाले इस मंदिर के शिखर विशाल होने के कारण भव्य लगता है। मंदिर का प्रवेश द्वार अन्य मंदिरों से भिन्न है।
संवत 1659 का लेख उत्कीर्ण
मंदिर की नवचौकी पर संवत 1659 का एक लेख उत्कीर्ण है। जिसमें अमरसिंह मायावीर नामक राजा के त्रिभुवन नामक मंत्री के वंशज मूता नारायण को नाणा गांव भेंट देने का उल्लेख है। मंदिर और धर्मशाला की व्यवस्था नाणा की वद्रधमान आनन्दजी जैन पेढ़ी देखती है। नाणा तीर्थ गोडवाड़ की छोटी पंचतीर्थ में स्थान रखता है। सिरोही[16,17,18] जिले की पिण्डवाड़ा, नादिया आदि तीर्थों की पंचतीर्थी में भी इसे शामिल किया गया है। मान्यता है के नाणक्यगच्छ का उद्गम स्थल भी नाणा ही है। इस गच्छ की उत्पत्ति विण् की बाहरवीं सदी से पूर्व हुई थी।[19,20,21]

निष्कर्ष

गोडवाड़ क्षेत्र के तीर्थ स्थलों में है महत्वपूर्ण स्थलनाणा गांव स्थित जैन मंदिर। पाली. गोडवाड़ क्षेत्र के जैन तीर्थों में नाणा गांव का मंदिर महत्वपूर्ण माना जाता है। मान्यता के अनुसार इस जैन मंदिर में मूलनायक की प्रतिमा की स्थापना भगवान महावीर के जीवनकाल में ही हुई थी।[22,23]

संदर्भ

1. "पोर्टल, राजस्थान सरकार". sirohi.rajasthan.gov.in. अभिगमन तिथि 2023-06-17.
2. ↑ "पोर्टल, राजस्थान सरकार". sirohi.rajasthan.gov.in. अभिगमन तिथि 2023-06-17.
3. ↑ "Godwad Circuit of Rajasthan-Royal Retreats Travel Places,Godwad Circuit of Rajasthan Attractions,Rajasthan Tourism Office,Godwad Circuit of Rajasthan Tours & Travels Agents,,Godwad, Delwara Jain temples, Vimal Vasahi, Jain Tirthankara, Adinath, Rana Kumbha of Mewar, Achaleshwar Mahadev, Shantinath Jain temple, Pali, Bali Fort, Nani Sirari, Rao Shobhaji, Rao Sahas Mal, Jalore Fort, Alauddin Khilji". web.archive.org. 2008-03-11. अभिगमन तिथि 2023-06-17.
4. "जिला जनगणना पुस्तिका 2011 - पाली" (पीडीएफ) । भारत की जनगणना । भारत के रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त ।
5. ↑ 1901 से जनसंख्या में दशकीय परिवर्तन
6. ^ पाली, भारत, शीट एनजी 43-09 (स्थलाकृतिक मानचित्र, स्केल 1:250,000) , श्रृंखला यू-502, संयुक्त राज्य सेना मानचित्र सेवा, नवंबर 1959
7. ^ "राष्ट्रीय भूवैज्ञानिक स्मारक, भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण की वेबसाइट से" । मूल से 12 जुलाई 2017 को संग्रहीत । 21 जनवरी 2019 को लिया गया ।
8. ^ "भू-विरासत स्थल" . pib.nic.in . प्रेस सूचना ब्यूरो । 9 मार्च 2016 । 15 सितंबर 2018 को लिया गया ।
9. ↑ भारत की राष्ट्रीय भू-विरासत , INTACH
10. ^ "पाली 'रंगाई': बेरोजगार मजदूर, किसान उम्मीद के खिलाफ उम्मीद - टाइम्स ऑफ इंडिया" . indiatimes.com .
11. ^ "संसदीय और विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों का परिसीमन आदेश, 2008" (पीडीएफ) । भारत चुनाव आयोग। 26 नवंबर 2008 । 21 जून 2018 को लिया गया ।
12. ^ "संग्रहीत प्रति" । मूल से 4 नवंबर 2012 को संग्रहीत । 4 नवंबर 2012 को लिया गया ।
13. ↑ "राजस्थान बजट 2012-13" (पीडीएफ) . मूल (पीडीएफ) से 24 सितंबर 2015 को पुरालेखित . अभिगमन तिथि 27 मार्च 2012 .
14. ^ पाली, राजस्थान की ग्राम पंचायतें संग्रहीत 2016-03-11 पर वेबैक मशीन
15. ^ "विभिन्न स्रोतों से सिंचाई, जिला: पाली" (पीडीएफ) । केंद्रीय भूजल बोर्ड।
16. ^ "बड़े बांधों का राष्ट्रीय रजिस्टर-2009" (पीडीएफ) . केंद्रीय जल आयोग।
17. ^ "बांध" । मूल से 27 फरवरी 2012 को संग्रहीत ।
18. ^ "जवाई बांध" । टाइम्स ऑफ इंडिया । 17 फरवरी 2022 । 27 फरवरी 2022 को लिया गया ।
19. ^ "[आईआरएफसीए] भारतीय रेलवे FAQ: आईआर इतिहास: शुरुआती दिन - 2" . irfca.org .
20. ^ "[आईआरएफसीए] भारतीय रेलवे FAQ: आईआर इतिहास: भाग 6" . irfca.org .
21. ^ नई लाइनों का सर्वेक्षण

22. ^ "तालिका C-01 धर्म के अनुसार जनसंख्या - राजस्थान" . Census.gov.in . भारत के रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त .
23. ↑ यहाँ जाएं:"तालिका C-16 मातृभाषा के अनुसार जनसंख्या: राजस्थान" . Censusindia.gov.in . .

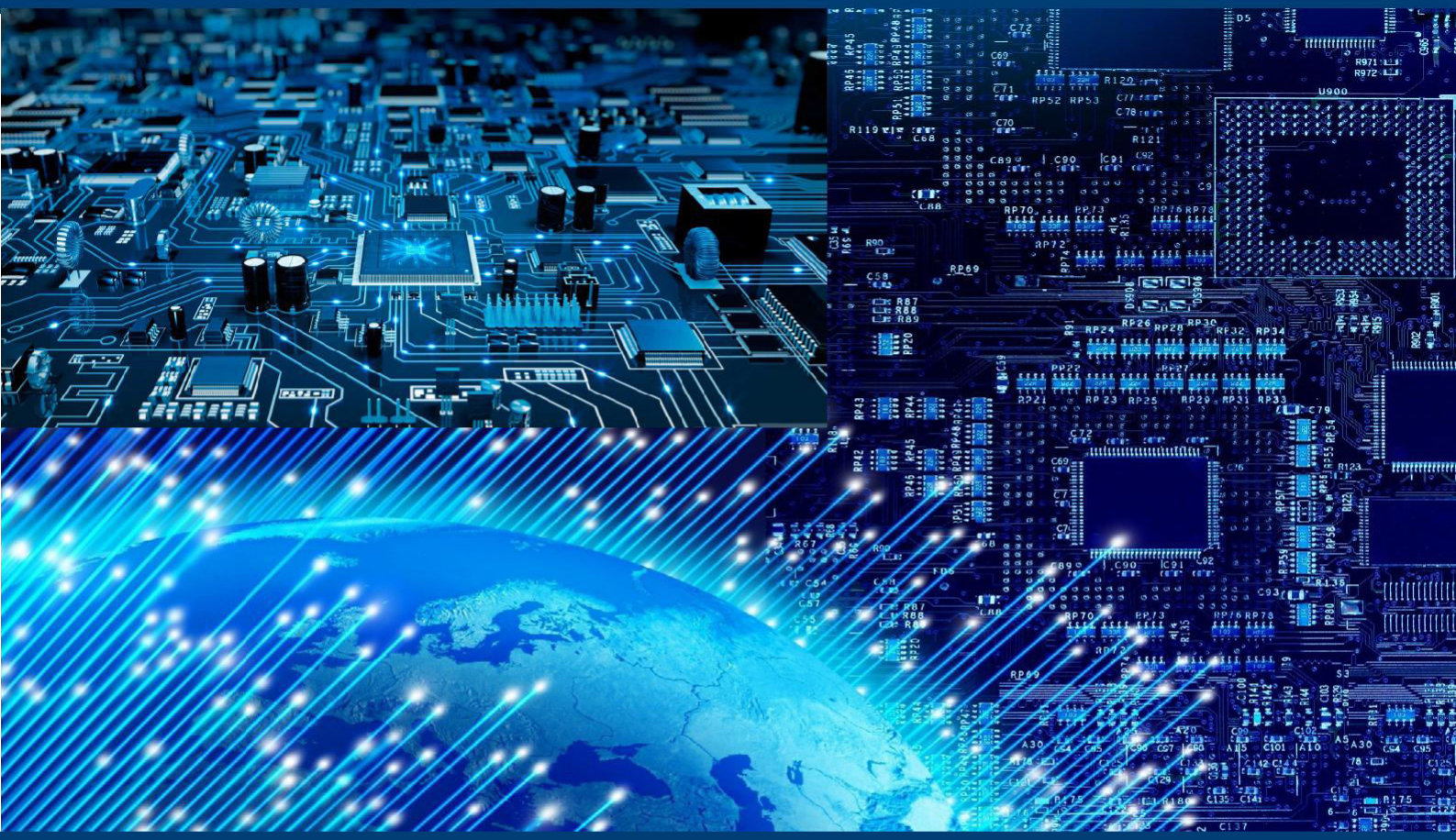

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |